एक बुराई गिरवी

•डॉ. सेवा नन्दवाल

''माँ मुझे इलेक्ट्रॉनिक मोपेड चाहिए ''– कुश ने फरमाईश की। ''अभी तुम छोटे हो बेटा इतनी महंगी चीज नहीं खरीद सकते''– माँ ने स्पष्ट इंकार किया। ''माँ आज बाल दिवस है और इस दिन सब बच्चों की फरमाईश पूरी की जाती है और आप ... कहते हुए कुश रुक गया।'' ''कह दिया न नहीं दिला सकते, अभी चाहिए तो जाओ जाकर भगवान जी से मांग लो शायद वे दे दें।'' – माँ ने झुंझलाते हुए टाल दिया। इस बार उनका लहजा सख्त था। ''ठीक है, अब भगवान जी का सहारा है'' – झल्लाते हुए कुश बोला और अपने कमरे में जाकर बिस्तर पर लेट गया। आंखें बंद कर भगवान को याद कर प्रार्थना करने लगा।

खूबसूरत वादियों में एक स्थान पर लिखा हुआ था। ''परीलोक में सब बच्चों का हार्दिक स्वागत है।'' चारों तरफ उत्सव का माहौल था और देश के विभिन्न हिस्सों से आए हुए बच्चों की चहलपहल दिखाई दे रही थी।

गुल परी ने कहा– ''बच्चे सबसे पहले अपना परिचय देंगे, जो बच्चा सबसे अच्छे तरीके से परिचय प्रस्तुत करेगा उसे एक विशेष पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।''

औपचारिकता निभाते हुए बच्चों ने अपने अंदाज में बढ़ चढ़कर परिचय प्रस्तुत किया। एक ने कहा– ''मेरा नाम रामकृष्ण, पिता का नाम बालकृष्ण, ग्राम – नेवारी, तहसील हबीबगंज, जिला भोपाल, मध्यप्रदेश का रहने वाला'' दूसरे ने बताया– ''मेरे पिता श्री का नाम गोवर्धन दास, मेरा नाम पारस दास, मोहल्ला – महाल, नागपुर, महाराष्ट्र '' इसी तर्ज पर अधिकांश बच्चों ने अपना परिचय दिया। अब कुश की बारी थी – ''मेरा नाम कुश। पिताजी का नाम श्री देव और निवास भारत।''

परियों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उसका अभिनंदन कर जता दिया कि उसका तरीका सर्वश्रेष्ठ है। अपना एक पुरस्कार तय हो जाने पर कुश को प्रसन्नता हुई।

रानी परी ने घोषणा की – ''अब बारी अन्य प्रतियोगिता की। वह सामने काफी ऊँचाई पर अधर में एक विशालकाय गुब्बारा लटकता हुआ दिखाई रे रहा है उसमें ढेर सारी मिठाईयाँ हैं ... जो बच्चा उस गुब्बारे को जमीन पर उतार लाएगा उसे वे ढेर सारी मिठाईयाँ प्राप्त हो जाएंगी।''

एक साहसी बच्चे ने एक उँची सीढ़ी से उछलकर गुब्बारा पकड़ने की कोशिश की पर कामयाबी नहीं मिली। एक अन्य बच्चे ने जन्माष्टमी पर मटकी फोड़ने की तर्ज पर एक के ऊपर एक चढ़कर गुब्बारा पकड़ने की कोशिश की पर सफलता नहीं मिली। इसके

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

पश्चात अनेक प्रतिभागियों ने गुब्बारे को जमीन पर उतारने की भरपूर कोशिश की लेकिन वे स्वयं जमीं पर आ गिरे और गुब्बारा अपने स्थान पर शान से लटका रहा।

कुश का क्रम आया तो उसने एक बड़ी पतंग में डोर बांधी और पतंग के चारों तरफ नुकीली पिने चिपका दी। पतंग को काफी ऊँचाई तक पहुँचाकर गुब्बारे से बार – बार टकराया। पिन चुभते ही गुब्बारा फट गया और मिठाईयों के ढेर सारे पैकेट फूटे गुब्बारे के साथ भरभराकर नीचे गिर पड़े। अपनी सफलता पर कुश की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा।

रानी परी ने बधाई देते हुए पूछ लिया–''इतनी मिठाई का क्या करोगे?'' कुश ने मुस्कराते हुए जवाब दिया – ''यहाँ उपस्थित सब बच्चों में बांटकर खाऊँगा।''

समस्त बच्चों का मुँह मीठा कराया गया। दिनभर की धमाचौकड़ी, मौजमस्ती और खेलकूद से बच्चे अति प्रसन्न थे। विदाई स्थल पर उपहारों का पहाड़ खड़ा देख उनकी खुशी में और वृद्धि हो गई।

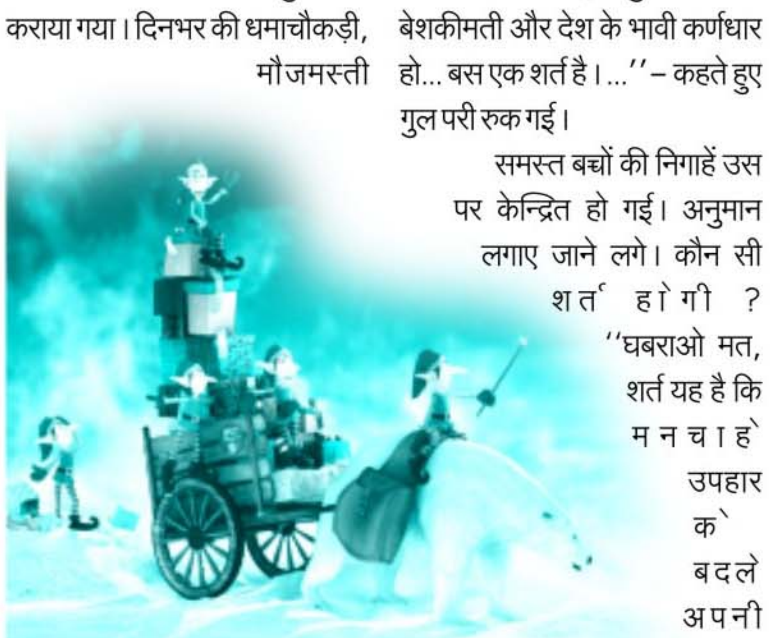

''क्या सभी बच्चों को उपहार मिलेंगे?''– एक बच्चे ने ललचाई नजरों से ताकते हुए शंका प्रस्तुत की। ''हाँ सबको मिलेगा। कोई बच्चा यहाँ से खाली हाथ नहीं जाएगा। ''– मोना परी ने आश्वस्त किया। ''हम जो चाहेंगे वह मिलेगा या यहाँ पर जो है उसमें से लेना पड़ेगा''– एक अन्य बच्चे ने उत्सुकता प्रकट की।

''सबको मनचाहा उपहार मिलेगा, अगर कोई वस्तु यहाँ नहीं होगी तो फौरन मंगवा कर दी जाएगी''– चंदा परी ने जानकारी दी। ''चाहे वह कितनी भी कीमती हो।''– एक बच्चे को विश्वास नहीं हुआ तो पूछ लिया। ''हाँ भाई, कीमती उपहार कीमती बच्चों के लिए ... तुम बच्चे भी तो बेशकीमती और देश के भावी कर्णधार हो... बस एक शर्त है। ...''– कहते हुए गुल परी रुक गई।

समस्त बच्चों की निगाहें उस पर केन्द्रित हो गई। अनुमान लगाए जाने लगे। कौन सी शर्त होगी ? ''घबराओ मत, शर्त यह है कि मनचाहे उपहार के बदले अपनी एक बुराई यहाँ गिरवी रखनी पड़ेगी '' – गुल परी ने बात पूरी की। अधिकांश बच्चे समझ नहीं पाए और परस्पर कानफूसी करने लगे। एक बच्चे ने झिझकते हुए पूछ लिया – ''बुराई गिरवी रखने का तात्पर्य ... हम समझ नहीं पाए।''

''मैं समझाती हूँ – रानी परी बोली वैसे तो तुम सब बच्चे अच्छे प्रतीत होते हो लेकिन तुम में अवश्य कुछ न कुछ बुराईयाँ आ गईं होंगी... उदाहरण बताऊँ क्या ?''

''नहीं दीदी, हम सब समझ गए'' – अनेक बच्चे चिल्ला पड़े।

''बस तो फिर उनमें से एक बुराई को यहाँ रखकर उपहार ले जाओ बुराई को गिरवीं रखने का तात्पर्य यह है कि उस बुराई पर अब तुम्हारा अधिकार नहीं रहा इसलिए उसका उपयोग नहीं करोगे। जिस दिन भूलकर भी तुम ऐसा करने की कोशिश करोगे वह उपहार हमारे पास वापस लौट आएगा ... अब यह तुम्हारे ऊपर है कि उपहार को अपने पास कब तक रखना चाहते हो .. चाहे तो हमेशा के लिए अपने पास रख सकेते हो ''– रानी परी ने विस्तार से बताया।

सब बच्चों में मनचाहा उपहार पाने की ललक थी इसलिए तालियाँ पीटकर इस घोषणा का स्वागत कर दिया। वे अति प्रसन्न दिख रहे थे साथ ही यह भी सोचते जा रहे थे कि अपनी किस बुराई को गिरवी रखें ... निर्णय अति शीघ्र करना था।

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका